‘‘राजी सेठ की कहानियों में चित्रित नारी पात्र’’

स्वामी रामानदं तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,
नांदेड-४३१६०६, महाराष्ट्र

‘मानव्यविद्या संकाय’ अतंर्गत पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु
प्रस्ततु शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध-छात्रा
देशमुख योगीता भारतराव
(एम.ए., बी.एड., एम. फिल.)

शोध-निर्देशक
डॉ. प्रतिभा जी. येरेकर
प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय,
धर्माबाद, जि. नांदेड

अनुसंधान-केंद्र
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद

मई, २०२२

‘‘राजी सेठ की कहानियों में चित्रित नारी पात्र’’

प्रस्तावना:

कहानी गद्य साहित्य की सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है, जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। हिन्दी कहानी गद्य की वह विधा है जिसमे लेखक किसी घटना, पात्र अथवा समस्या का कृमबध्द ब्यौरा देता है, जिसे पढकर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न होता है।

समाज में कहानी कहने और सुनने की प्रवृत्ति अती प्राचीन काल से चलती आ रही है, प्राचीन साहित्य में कथाओं की परंपरा है। हिंदी कहानी का आरंभ बीसवी शताब्दी से माना जाता है। प्राचीन वैदिक साहित्य में भी कहानी की प्रवृति विद्यमान थी। संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र की कहानियॉं प्रसिध्द है। बुध्द की जातक कथाएँ भी कहानी प्रवृति का परिचय देती है। हिन्दी कहानी का इतिहास भारतेन्दू युग से जारी हो जाता है। कहानी कहने का मनोरंजक एंव विशिष्ठ ढंग है जिसके व्दारा बडे जटिल एवं गहन विषयों को समझने का प्रयत्न मानव समाज में प्राचीन समय से होता आया है। आज ‘कहानी’ शब्द एक विशिष्ठ प्रकार की रचना के लिए रूढ हो गया है।

कहानी मनुष्य की विशाल जीवन की किसी अंश की झॉंकी प्रस्तुत करती है संसार के अनेक विव्दानों ने कहानी की गति, रूप, आकार, कथावस्तू और शिल्प के आधार पर कई दृष्टिकोणो से इसे परिभाषित करने का प्रयास किया है। प्रेमचंद ने कहानी के संदर्भ में लिखा है कि ‘‘भाव साहित्य का प्रमाण है और मनोभावों का प्रदर्शन ही कहानी की आत्मा है।’’

आधुनिक काल की विकसितसभी गद्य विधाओं में सबसे महत्वपूर्ण स्थान कहानी विधा का है। आज वही साहित्य महत्वपूर्ण है हमारे वास्तविक तथा वर्तमान जीवन से जुडा है। कहानी जीवन और जगत की प्रतिछाया होती है। वह व्यवस्था में व्याप्त समस्याओं पर दृष्टिपात मात्र नही करती, वरन हमें उन समस्याओं से जूझने की चेतना और शक्ति प्रदान कर हमे सावधान भी करती है।

समकालीन हिंदी कहानी भारतीय परिवेश का जीवंत अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है। भारतीय जनजीवन में पर्याप्त परिवर्तन आया तो हिन्दी कहानी भी उसी बदलते परिवेश की अभिव्यक्ति करने लगी है कहानी मानव जीवन से सीधे रूप में जुडी है। वह सामाजिक संवेदनाओं को प्रखरता से प्रस्तुत कर रही है। जिसके कारण समकालीन कहानियों मे सामाजिक संवेदनाओं

को प्रखरता से प्रस्तुत कर रही है। जिसके कारण समकालीन कहानियोँ में सामाजिक धार्मिक तथा आर्थिक, नारी समस्याओं के आयामों का उद्‌घाटन हुआ है।

समकालीन व्यथा का महिला कथाकारोंने आर्थिक विषमता, राजनीतिक विडम्बना और स्त्री-पुरूषों के नये संम्बन्धों आदि को सूक्ष्मता से परखा है। साथ ही वर्तमान विसंगत परिवेश में घूटते - टूटते और कुष्ठिन होते व्यक्ति की आन्तरिक दशाओंका चित्रण तथा आधुनिक मानसिकता व्दंव्द का चित्रण किया है।

हिंदी कथासाहित्य भारतीय कथासाहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । समकालीन कथासाहित्य में राजी सेठ ने अपनी विशिष्ठ और अलग पहचान बनायी है। राजी सेठ की कहानियों मे आधुनिक युग की नारी समस्याओं का चित्रण बडी मार्मिकता से हुआ है। राजी सेठ का साहित्य मात्र स्त्री जगत की समस्याओं को ही उजागर नही करता. अपितु उनके साहित्य में पुरूषवर्ग की मानसिकता और संवेदनाओं को भी अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है। राजी सेठ ने नारी जीवन से जुडी अनेक ज्वलंत समस्याओ को अभिव्यक्त किया है । राजी सेठ का साहित्य मार्गदर्शन का समाजसुधार का, नवनिर्माण का, आत्म अन्वेषन का, आत्म सुधारका, चेतना का साहित्य है। उनकी कहानियों घोर परिस्थितियों से जूझने का मनोबल एंव हथियार है।

राजी सेठ की प्रथम कहानी समांतर चलते हुए 'प्रतिक' अंक में प्रकाशित हुई तब से लेकर आज तफवह लेखन में व्यस्त ही है। 'अंधे मोड से आगे' तथा 'तीसरी हथेली' यह कहानीसंग्रह उल्लेखनीयहै। राजी सेठ के पास जीवन को देखने की अपनी दृष्टि के कारण अपरिचीत कथा से भी अपनी इब्सित साध्य ढूंढ लेती है। 'अपने दायरे नामक' कहानी मे ऐसी नारी मन की गुत्थियों को सुलझााने का सामर्थ्य राजी सेठ के कहानियों मे हुआ है।

राजी सेठ के कहानियों को पढने के बाद उनकी भाषा से, विचारो से, शब्दों से मै बहुत प्रभावित हुई हू। इसलिए उनके कहानीसंग्रह पर लेखन कार्य करने का संकल्प किया है।

विषय चयन की प्रेरणा:

कहानी में जीवन का समग्र चित्रण पूरी यथार्थता के साथ होने के कारण अनय विधा की तुलना में कहानी विधा के प्रति मेरी अधिक रूचि रही है। अध्ययन और अध्यापन के समय जिन कथाकारों की रचनाओं को पढने का मुझे अवसर मिला, उससे विशेष रूपसे समकालीन कथा साहित्य की ओर मेरी रूचि और अधिक बढती गयी। जैसे जैसे देश का सामाजिक, राजनितिक,

धार्मिक परिवेश बदलता गया वैसे ही हिंदी कहानियों में कथावस्तु में परिवर्तन होता गया। पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरन के कारण भारतीय नैतिक मूल्यों का हो रहा पतन नारी का अंतर्गत व्दंद, प्रेम में असफलता, सांप्रदायिकता का उग्र स्वरूप, आधुनिक परिवर्तन जीवनमूल्यों का विवेचन पूरी यथार्थता के साथ राजी सेठ ने अपनी कहानियों में किया है और इन सब घटनाओंका मानवी समाज जीवन पर जो प्रभाव पडा है इन सभी माहौल का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहती हू इसलिए मैने 'राजी सेठ की कहानियों में चित्रित नारी पात्र' इस शीर्षक को अपने शोधकार्य का विषय बनाना चाहा। इस विषय को मेरे मार्गदर्शक, गुरूवर्य प्रा.डॉ. प्रतिभा जी. येरेकारजी ने अनुमति दी है। और समय समय पर मुझे मार्गदर्शन किया है।

अनुसंधान का उद्‌देश्य:

१. राजी सेठ : जीवनी एंव रचनाओं का अध्ययन करना।

२. हिंदी महिला कहानीकार विकासात्मक अध्ययन करना।

३. राजी सेठ की कहानियों का कथ्यगत अध्ययन करना।

४. राजी सेठ की कहानियों के नारी पात्रों का अध्ययन करना।

५. राजी सेठ की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन करना

अनुसंधान की पध्दतियां:

ज्ञान का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि जिसकी प्राप्ति के लिए एंव अध्ययन के लिए विभिन्न शोध पध्दतीयों की आवश्यकता पडती है। शीर्षक का क्षेत्र अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत होने के कारन विभिन्न शोध पध्दतियोंका प्रयोग किया जाएगा । जैसे आलोचनात्मक, वर्णनात्मक आदि विषय की तह तक जाने के लिए सहायक ग्रंथों का सहारा लिया जायगा।

अनुसंधान की सीमा और व्याप्ति:

वस्तुत: हर शोध विषय की अपनी एक सीमा और व्याप्ति होती है, और होना भी चाहिए। इसी कारण मैने राजी सेठ की कहानियों तक ही विषय को सीमित रखा है। राजी सेठ की कहानियों का विभिन्न कोनों से सूक्ष्म और गंभीर अध्ययन अनुसंधान की दृष्टि से मैने अपने शोध प्रंबध को निम्नांकित छ: अध्ययों में विभाजित किया है।

अनुसंधान कार्य के शीर्षक :

१. राजी सेठ जीवनी एंव रचनाएं

२. हिंदी महिला कहानीकार : विकासात्मक अध्ययन

३. राजी सेठ की कहानियों का कथ्यगत अध्ययन

४. राजी सेठ की कहानियों के नारी पात्र

५. राजी सेठ की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन

६. उपसंहार

शोध विषय का महत्व:

समकालीन कहानियों में समाज जीवन के विडंबनापूर्ण स्थिति का चित्रण किया गया है। नैतिक मूल्यों में बदलाव, जीवन मूल्योंका -हास, ग्रामीण जीवन में आए बदलाव की स्थिति, बढती महंगाई, भ्रष्टाचार, पारिवारिक तनाव, सांप्रदायिकता, स्त्री का अस्तित्व, चेतना के उभरते हुए स्वर, भोगवादी प्रवृति, नारी के विविध रूप, नारी मन का व्दंद, इन सब समस्याओं को पूरी यथार्थता के साथ उद्‌घाटित करना इस शोधकार्य का मुख्य उद्‌देश है। इसलिए इस विषय पर अनुसंधान होना ही अनुसंधान क्षेत्र में निश्चित ही महत्व है। राजी सेठ की कहानियां समाज परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का कार्य करती है। अत: मेरा शोध इस अभाव की पूर्ति की विनम्र कोशिश है।

अनुसंधान कार्य :

प्रथम अध्याय : राजी सेठ : जीवनी एवं रचनाऐं

इस अध्याय के अंतर्गत राजी सेठ का जीवन परिचय, जन्म, माता-पिता एंव परिवार,शिक्षा, विवाह, रचनाकर्म का प्रारंभ, रहन सहन और स्वभाव संपादन, सम्मान पुरस्कार, उपलब्धियां, उपन्यास साहित्य,समीक्षा, कहानी साहित्य, अनुवादित कृतियॉं, अंग्रेजी कहानी संग्रह आदि का अध्ययन विस्तार से किया जाएगा।

व्दितीय अध्याय : हिंदी महिला कहानिकार : विकासात्मक अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत हिंदी महिला कहानीकारोंका विकास किस तरहा से हुआ है, इन सभी मुद्दों का विकासात्मक रूप से अध्ययन किया जाएगा। हिंदी कहानीकार तो बहुत है, लेकिन हिंदी महिला कहानीकारोंका विकासात्मक अध्ययन यह हिंदी साहित्य के लिए विशेष है। हिंदी महिला कहानीकारों ने हिंदी साहित्य में विशेष स्थान बनाने का प्रयास किया है। यह हिंदी साहित्य के लिए एक अनमोल तोहफा है।

तृतीय अध्याय : राजी सेठ की कहानियोंका कथ्यगत अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत राजी सेठ की कहानियोंका कथ्यगत अध्ययन किया जाएगा। ‘अंधे मोड से आगे’ यह राजी सेठ का पहला कहानी संकलन है, जिसकी पहली आवृत्ती २००२ में प्रकाशित हुई। इस कहानी संकलन में ११ कहानियां है।

‘तीसरी हथेली’ यह राजी सेठ का दूसरा कहानी संकलन है, जिसकी दूसरी आवृत्ती २००१ में प्रकाशित हुई है। इस कहानी संकलन में १० कहानियां है। ‘यह कहानी नही’ यह राजी सेठ का प्रसिध्द कहानी संकलन है।

राजी सेठ की अधिकतर कहानियों का कथ्यात्मक आधार सूक्ष्म है। उनकी कुछ कहानियों में सामाजिक मानदंडो ने स्थान पाया है, कुछ रूढियों को हमारा समाज केवल इसलिए ढोता चला आ रहा है कि हमारे पूर्वज ऐसा किया करते थे। जैसे दाह कर्म जैसे

कर्मकांड पर व्यंग्यात्मक प्रश्नचिन्ह राजी सेठ ने अपनी कहानियों मे लगाया है। सामाजिक रूप से पगडी बांधने की प्रथा का वर्णन उनकी कहानियों मे चित्रित हुआ है।

राजी सेठ के इन तीन कहानी संग्रह के कथ्य से हम जान पाये है कि इस कहानियों में परंपरा और रूढियों को तोडने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : राजी सेठ की कहानियों के नारी पात्र

राजी सेठ की कहानियों में नारी पात्रों को, घटना - प्रसंगो को बडी यर्थाथता के साथ दर्शाने का प्रयास किया गया है, इनकी कहानियो के नारी पात्र, निडर, सहासी, सहनशील, व्यवस्था से डटकर सामना करनेवाली नारी आदि को राजी सेठ ने अपनी कहानियों में दर्शाने का प्रयास किया है। इन सभी पात्रोंका यथार्थ चित्रण इस अध्याय में होगा।

पंचम अध्याय : राजी सेठ की कहानियों का शिलपगत अध्ययन

इस अध्याय के अंतर्गत भाषा और शिल्प के अध्ययन के साथ-साथ लेखन शैली, कथागत बिखराव आदि का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाएगा। राजी सेठ की कहानियों की भाषा सामान्य पाठक को आकर्षित करनेवाली भाषा है। पाठक पर सीधे वार करती है। पाठक सोंचने पर मजबूर हो जाता है। भाषा में संवेदना, मार्मिकता, भावुकता सीधे रूप से दिखाई देती है।

षष्ठम अध्याय : उपसंहार / निष्कर्ष / मूल्यांकन

उपसंहार, सभी अध्यायोंका निचोड होता है। राजी सेठ अपनी कहानियों में निम्न वर्गीय समाज की उपेक्षा कि है। राजी सेठ की नारी में निरंतर अलगाव की स्थिति बनी हुई है। राजी सेठ की नायिकांए कभी सामाजिक ढांचे पर कुढती है और कभी सम्यक परिवर्तन के लिए उध्दीग्न होती दिखाई देती है। परंतु साहस जुटा पाती। राजी सेठ ने नारी के चित्र को मनोविज्ञान तथा मानव व्यवहार के कई संदर्भो मे खोला, परखा है।

उनकी कहानियों में कई प्रकार के संत्रस उपस्थित है। राजी सेठकी कई कहानियों में नारी प्रेमिका के रूप में आयी है। वह प्रेम शुध्द रूप में विदयामान है। जहॉ पूर्ण आकार्षन है, प्रतिबध्दता है, त्याग, एकनिष्ठा, समर्पण भाव है। राजीजी यह मानकर चलती है कि जीवन परिवर्तनशील है, इसीलिए समय के साथ जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन आता रहता है। जीवन की नीव समझे जानेवाले नैतिक मानव मूल्योंको उपयोगितावाद की कसौटी पर परखकर जीवन सें खारिज कर दे जीवन में अनाचार के सिवा कुछ शेष नही रह सकेगा। उपयोगितावाद आज मनुष्य को अपने मानवमूल्योंसे जीवन के आदर्शो से हटाकर अंधकार की खाई में धकेल रहा है।

राजी सेठ की कहानिया तत्कालीन समाज का अकूल दर्पन था। और आज वह उतना ही प्रासंगिक दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

१. अंधे मोड से आगे, राजी सेठ (तृ.सं.) राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली.

२. तीसरी हथेली, राजी सेठ (तृ.सं.) राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली.

३. यह कहानी नही, राजी सेठ (द्वि.सं.) भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली.

४. सदियों से - नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई लिल्ली, प्र.सं. १९९९

५. यात्रा मुक्त - नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई लिल्ली, प्र.सं. २०००

६. गमे हयात ने मारा- भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली प्र.सं. २००९

संदर्भ ग्रंथ

१. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे विकास प्रकाशन, कानपुर.

२. आधुनिक हिंदी साहित्य : सिध्दांत एवं अध्ययन (सं.पा.) डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय प्रकाश प्रकाशन मथुरा.

३. आधुनिक हिंदी कथासाहित्य में नारी का बदलता स्वरूप : डॉ. मुदिता चन्द्राविकास प्रकाशन, कानपुर

४. नारी एवं समाज (सं.पा.) चंद्रमोहन अग्रवाल

५. बीसवी शताब्दी के अंतिम दशक की कहानियों में नारी डॉ. बबनराव बोडके (प्र.सं.) विकास प्रकाशन, कानपुर

६. भारतीय समाज में नारी : नीरा देसाई मॅकमिल प्रकाशन, नयी दिल्ली

७. राजी सेठ का रचना संसार : डॉ. स्नेहजा सोनाले (प्र.सं.) विद्या प्रकाशन, कानपुर.

८. स्वातंत्रोतर हिंदी कहानी में. नारी के विविध रूप : डॉ. गणेश दास (प्र.सं.) अक्षय प्रकाशन, कानपुर

९. साठोतरी हिंदी लेखिकाओंकी कहानियों में नारी : डॉ. मंगल कप्पीकेरे (प्र.सं.) विकास प्रकाशन, कानपुर

१०. हिंदी कहानी में नारी की सामाजिक भूमिका : डॉ. अनिक गोयल, अर्चना प्रकाशन, नयी दिल्ली.

११. हिंदी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना : डॉ. सुरेश सिन्हा अशोक प्रकाशन, नयी दिल्ली.

१२. हिंदी साहित्य का सही इतिहास : डॉ. चंद्रभानु सोनवणे आलोक प्रकाशन, औरंगाबाद.

१३. प्रेमचंद के उपन्यासों मे. नारी समस्याएँ : प्रा.डॉ. वसुंधरा नरदेव गुडे, नयन प्रकाशन महरौली नयी दिल्ली.

कोश ग्रंथ

१. बृहद हिंदी कोश - ज्ञानमंडल, बनारस

२. राजपाल हिंदी शब्दकोश - डॉ. हरदेव बाहरी

३. शिक्षक हिंदी कोश - डॉ. हरदेव बाहरी

४. हिंदी शब्दसागर - संपा शामसुंदरदास नवाभाग

पत्र - पत्रिकाएं

१. हंस - दिसम्बर २०१८

२. नया ज्ञानोदय, अगस्त २०१९

३. जनसत्ता, ४ मई २००१

४. अपनी माटी, त्रैमासिक ई-पत्रिका, जनवरी २०१९

४. आलोचना, २०२०

शोध-निर्देशक
प्रा.डॉ. प्रतिभा जी. येरेकर
प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय, धर्माबाद
जि. नांदेड

शोध-छात्रा
देशमुख योगीता भारतराव